रोग अऊ अयेला रोके बर तरीका -

कलिहारी हर खूद हि एकठन छोटेजहर हावे। जेखर खतिर ऐमा भी कुछु कीरा के दवाई नि लागे। कभु–कभु कुछु कीरामन जैसन– लिली ग्रीन केटरपिलर, लीफ ब्लाइट अऊ राइजोमराट के प्रकोप हो जाथे। येखर निवारण बर एक दू बार बड़िया फफूंद नाशकमन ल छिड़क देथन।

दोहन व इकट्ठा करथन -

कलिहारी कि पौधा मा फूल (अगस्त–सितम्बर) भादों–कुंवार मा अऊ फर हर (अक्टूबर–नवम्बर) कार्तिक–अघ्घन मा आथे। येखर फसल अनुमानित 170–180 दिन मा तियार हो जाथे (दिसम्बर) पुस महिना मा येखर पक्का फर जोन्हर थोड़कन हरिया हरदी रंग के होथे, ओला तोड़के छायादार जगहमन मा 10–15 दिन तके सुखावन। फरमन ले बीजा निकाल के बढ़िया ढ़ंग से सुखा लेथन। छिलका अऊ बीजा दुनो हर काम के होथे। ओला आने–आने बोरामा अऊ पना के झोला मा इकट्ठा कर लेथन।

5–6 बरस के फसल के बाद कंदमन ल उखाड़के सुखा ये ले पहिले धोके नान्हू–नान्हू टुकड़ा करके बड़िया ढ़ंग से सुखा लेथन। काबर येला सुखायेबर मा अंदाजन 3 महिना लागथे।

उत्पादन अऊ उपज -

कलिहरी के बड़िया फसल मा प्रति हेक्टेयर 250–300 कि.ग्रा. बीजा मिलथे। साथमा पाँचवे बरस बाद मा 2.5–3.00 टन सुख्खा कंद घलो मिलथे।

बाजार मूल्य -

कलिहारी के बीजामन अऊ सुख्खा कन्दमन के बाजार मूल्य अंदाजन 400–500 रूपया अऊ 50–100 रू. प्रति कि.ग्रा. होथे।

अनुमानित आमदनी-खर्चा प्रति हेक्टेयर-

कलिहारी के खेती ले 5 बरसमा 2.5–3.00 लाख रूपया शुध्द आमदनी होथे। दूसरे बरस मा ही किसान बीजामन ल बेचके लाभ घलो उठाथे।

अनुवादक

आनन्द कुमार दास, आलोक कुमार थवाईत,
कु. रंजीता पटेल, श्रीमती शशिकिरण बर्वे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.– आर.एफ.आर.सी.,
मण्डला रोड, जबलपुर– 482021
फोनः 0761–2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.– आर.एफ.आर.सी.,
मण्डला रोड, जबलपुर– 482021
फोनः 0761–2840627

Amrit Offset # 2413943

कलिहारी

(Gloriosa superba)

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)
डाकघर – आर.एफ.आर.सी., मण्डला रोड
जबलपुर – 482 021 (म.प्र.)

पहिचान-

कलिहारी एक ठन बड़का बरस के नार होथे । येहर लिलियेसी कुल के सदस्य हावे। ऐखर वानस्पतिक नाम हर ग्लोरियोसा सुपरबा हावे। थोड़कन कम बुध्दि वाला दोहे के वजह ये प्रजाति गायब होये वाला प्रजाति के श्रृंखला मा शामिल होगे हावे। येहर बहुत बड़िया काम के दवाई वाला पौधा हावे। येखर जरी कांदी हर पतला ,लम्बरी अऊ भुँईया के नीचु के अंग मा कांदी जैसन गुदालु हल के जैसन होथे।

वानस्पतिक बातचीत-

कलिहारी हर नार जैसन पौधा हावे ।येखर पौधा पानी गिरे के महिना मा निकलथे । येखर पान गोलवा नि होके लट्टू जैसन ,भालामन असन, बॉस अऊ आदा के पानमन के आकार के हर 6–8 ईंच लम्बरी अऊ येखर नोक सुत्रीजैसन घुमावदार होथे। येखर फर 2 ईंच तके लम्बरी , 3 लम्बरी धारीमन समेत हेाथे। पानी गिरे के महिना मा फूल अऊ फर आथे। येखर लाली रंग के गुच्छामा फूल हर बड़ मन ल भाते।

भौगोलिक बातचीत -

कलिहारी हर जम्मो भारतभर मा 6 हजार फीट के पहाड़ श्रृंखलामन मा अपन आप हि होथे। येखर अलावा श्रीलंका, वर्मा, मलाया, चीन अऊ अफ्रीका मा घलो आसानी से पाये जाथे। येहर म.प्र., महाराष्ट्रा, छत्तीसगढ़, अऊ उड़ीसा के बनमा मा घलो पाये जाथे।

दवाई वाला पौधा -

कलिहारी कण्ठमाला, गठिया, बात पीरा बर, कोड़ के टानिक मा काम आथे अऊ। येहर एक छोटे–जहर हावे। थोड़कन मात्रा मा देह ल दीपन, कुटु पौष्टिक, जर ल रोके बर अऊ जियादा मात्रा मा देंहे ले गर्भ ल रोके वाला जैसन काम करथे।

सक्रिय घटक -

येखर कान्दा, फर अऊ बीजामन मा कोल्चीसीन अऊ ग्लोरियोसीन क्षारामद्रव (अल्केलाइट्स) अऊ सुगंधित तेल, बेन्जोईक अम्ल अऊ शक्कर जैसन चीज पाये जाथे।

भुँईया अऊ जलवायु -

कलिहारी के खेती बर बलुई, दोमट माटी जोनमें जलनिकासी के बढ़िया बिवस्था होथे अऊ पी. एच. 6.7 तक के होथे। सबले बढ़िया होथे। जोन भुँईया मा जल निकासी हर आसानी से होथे ओमे येला आसानी से लगाये जाथे।

खेती का तरिका -

खेत ल तियार करथन– खेत बर छॉटे खेत ल गर्मी महिना मा दू–तीन बार गहला जोत के अंदाजन 8–10 टन कम्पोस्ट अऊ सरे हावे गोबर के खातु ल मिला देथन। ओखर बाद मा अंदाजन 50–50 से.मी. के दुरिया मा नालि मन मा बनाके खेत ल तियार कर लेथन।

प्रवर्धन -

कलिहारी के (प्रवर्धन) पुनः जगाये के काम ल बीजा अऊ कान्दीमन द्वारा करथन। पुनः जगायेबर कांदीमन के भार ल 50 से 60 ग्रम तक रखथन।

बुआई:-

कलिहारी के पौधा ल रूपाई मा बीजामन द्वारा तियार करके रूपाई कर सकथन। बल्कि ऐसन करेसे पहिले के बरसमा खाली कान्दा हर तियार हो जाथे। अऊ येमा फूल अऊ बिजा नि आये। बल्कि येखर बुआई ला येसन कांदा जेखर भार 50–60 गिराम तक के होथे से करे ले पहिले बरसमा फर अऊ बीजा मिल थे। बल्कि बीजा मन ले ही फसल पाये बर पानी शुरू होवे के पहिले रूपाई मा 4–6 ईंच के दुरिया मा बुआई कर सकथन। दूसरा बरस मा कान्दामन ल खोदके 0.1 प्रतिशत फफूँदनाशक घोल मा उपचार करके पानी के महिना मा मेढ़मन मा 50 से.मी. लकीर से लकीर अऊ 45 से.मी. कान्दा से कान्दा के दुरिया रखके 6–9 ईंच गड्डा मा लगा देथन। अतः ये कहसकथन कि प्रति हेक्टेयर 8–9 क्विंटल कांदामन अनुमापित जरूरी रथे। येहर एक ठन बड़े नार बाला होथे, अतः येखर नार ला सजाये बर भाड़ीमन के खाई अऊ रूक मन के सुख्खा डालिमन ल हर कांदा के बाजू मा गाड़ देथन।

सिचाई -

पानि गिरे के महिना मा पानी डाले बर जरूरी नि रहे। बल्कि पानी गिरे के बाद जरूरत के अनुसार पानी ल सिंचथन।

निदाई-गुड़ाई -

भुँईया के जरूरत के आधार ले 2–3 बार निदाई–गुड़ाई करके खरपतवार ल निकाल देथन। निदाई करेके समय मा येखर धियान रखथन कि कलिहारी के तना हर झन टूटे काबर येहर बड़ कमजोर होथे। यदि येहर टूट जाथे ता फिर आने वाला बरस मा नि निकाले।